नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिबिम्ब

A Monthly E-Newsletter of Rana Pratap PG College Sultanpur

वर्ष . 01 अंक . 03 जनवरी 2024

RANA PRATAP POST GRADUATE COLLEGE SULTANPUR
CIVIL LINES-1, SULTANPUR-228001 (U.P.)
(Affiliated : Dr. Ram Manohar Lohiya Avadh University, Ayodhya)
www.rppgcollege.ac.in

संरक्षक

एडवोकेट संजय सिंह (अध्यक्ष)

एडवोकेट बालचंद्र सिंह (प्रबंधक)

प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी (प्राचार्य)

प्रधान सम्पादक

ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह 'रवि'

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी

सह सम्पादक

डॉ महमूद आलम

विभागाध्यक्ष उर्दू

डॉ मंजू ठाकुर.

असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति

प्रमोद श्रीवास्तव

प्रभारी कम्प्यूटर सेंटर

प्रतिनिधि

डॉ संतोष कुमार सिंह (अंश)

शिक्षा संकाय

चौरसिया गोरखनाथ

विज्ञान संकाय

डॉज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह.

कला संकाय

यशस्वी प्रताप सिंह

वाणिज्य संकाय

विद्यार्थी प्रतिनिधि

शिक्षा संकाय
सत्येन्द्र शुक्ल
(बीएड द्वितीय वर्ष)
अंशिका सिंह
(बीएड प्रथम वर्ष)
कला संकाय
रिया श्रीवास्तव
(बीए पंचम सेमेस्टर)
प्रतिमा मिश्र
(बीए प्रथम सेमेस्टर)

विज्ञान संकाय
अनुराग यादव
(बीएससी पंचम सेमेस्टर)
अनुपमा वर्मा
(बीएससी पंचम सेमेस्टर)
लक्ष्मी सिंह
(बीएससी प्रथम सेमेस्टर)
वाणिज्य संकाय
आयुष मिश्रा
(बीकाम तृतीय सेमेस्टर(

रचनायें / विचार/ समाचार / फोटो आदि भेजने का पता -

rppgcollegenewsletter@gmail.com

- लिखित सामग्री यूनीकोड या मंगल फांट में ही टाइप कर के भेजें। लिखित सामग्री फोटो, जेपीजी, पीडीएफ आदि में स्वीकार नहीं की जायेगी।
- News Letter के सम्बन्ध में किसी भी जानकारी / समस्या / सुझाव आदि के लिए अपने संकाय प्रतिनिधि से सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पादकीय

नूतन वर्ष अभिनंदन

प्रधान सम्पादक

भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम् की संस्कृति है जब हम विश्वगुरु बनने की परिकल्पना करते हैं तो हमें समूचे विश्व का ध्यान भी रखना ही होगा । यही हमारी प्राचीन संस्कृति रही है । विचार, वस्तु ,समय आदि का एक मानक स्वरुप तय करके ही हम पूरी दुनिया को एक परिवार मानने के सपने को साकार कर सकते हैं । ग्रेगरियन कैलेंडर भी उन्हीं मानकों में से एक है । जिस कैलेंडर से पूरी दुनिया में काम होता है जिस कैलेंडर को भारतीय संविधान ने मान्यता दी हो , जो कैलेंडर हमारे राजकाज और दिनचर्या में रचबस - गया हो उस कैलेंडर का विरोध करना कहीं से भी भारतीय संस्कृति का पोषण नहीं है ।

भारत एक विशाल देश है यहां के अलग अलग हिस्सों में अपने अलग अलग संवत्सर हैं । कई नववर्ष मनाने वाले भारत देश के किसी एक हिस्से के नववर्ष को भारतीय नववर्ष कह देना भी सटीक नहीं है। हम उत्सवधर्मी लोग हैं और कहीं का भी उत्सव अच्छे से मनाते हैं यही महान भारतीय संस्कृति की विशेषता है । हर नववर्ष का अपना महत्व है लेकिन पूरी दुनिया के कामकाज के लिए जो नववर्ष एक मानक बन गया हो उस नववर्ष का उत्सव समूची दुनिया में मनाया जाना स्वाभाविक भी है और उचित भी । जो भी इससे अपने को अलग करते हैं वे उदार चरितानाम तु वसुधैव कुटुंबकम् की परिकल्पना के विरोधी हैं । इसलिए आइये दुनिया के इस उत्सव में शामिल हों और धूमधाम से नववर्ष मनायें । साथ ही आगे आने वाले अन्य स्थानीय व क्षेत्रीय नववर्ष को भी इतने ही उत्साह से मनाने का संकल्प लें।

आप सभी को सपरिवार नूतन वर्ष **2024** की हार्दिक शुभकामनाएं ।..

"गोविन्दु"

आंग्ल सवंत्सरो भूयात्समेषां मङ्गलप्रदः।
कीर्तिदो मानदश्चापि विश्वशान्तिदायक।।:

News & Events

अर्थशास्त्र विभाग ने किया क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग ने तेरह दिसंबर को क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया। संयोजक डॉ सुनील कुमार त्रिपाठी ने बताया कि विद्यार्थियों को तीन समूहों में बांटा गया था। जिसमें टीम ए का नेतृत्व शिखा तिवारी,टीम बी का नेतृत्व सिमरन शेख तथा टीम सी का नेतृत्व अमन सिंह ने किया। विभागाध्यक्ष डॉधीरेन्द्र कुमार व असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ सुनील कुमार . त्रिपाठी ने पाठ्यक्रम से सम्बंधित प्रश्न पूछे। टीम बी प्रथम,टीम ए द्वितीय तथा टीम सी तृतीय स्थान पर रही ।

अंग्रेजी विभाग ने फेमिनिज्म पर संगोष्ठी का आयोजन किया

राणा प्रताप पी जी कॉलेज के अंग्रेजी विभाग में फ़ेमनिज्म विषय पर विद्यार्थी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो निशा सिंह ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि नारीवाद, समाजिक और राजनैतिक आन्दोलनों तथा विचारधाराओं की एक श्रेणी है, जो राजनीतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से लैंगिक समानता को परिभाषित करने, स्थापित करने और प्राप्त करने के एक लक्ष्य को साझा करते हैं।

असिस्टेंट प्रो ज्योति सक्सेना ने कहा कि नारीवादी सिद्धांत का लक्ष्य लैंगिक असमानता को समझना है और लैंगिक राजनीति, शक्ति संबंधों और लैंगिकता पर ध्यान केंद्रित करना है। इन सामाजिक और राजनीतिक संबंधों की आलोचना करते हुए, नारीवादी सिद्धांत का ज्यादातर हिस्सा महिलाओं के अधिकारो और हितों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इस सेमिनार में बीए फर्स्ट सेमेस्टर के राम विलास पाण्डेय, अंकित पाण्डेय,अंशिका सिंह,शशि जायसवाल, अदिति वर्मा, रुखसार बानो, बीए फिफ्थ सेमेस्टर के शिवानी तिवारी, मो कोनेन, संतोष कुमार बीए थर्ड सेमेस्टर के प्रतीक अग्रवाल ने विचार व्यक्त किया।

अंग्रेजी विभाग में हुई निबंध प्रतियोगिता

राणा प्रताप पी जी कॉलेज के अंग्रेजी विभाग द्वारा इंडिपेंडेंट इंडिया एंड डॉ बी आर अंबेडकर विषय पर निबंध प्रतियोगिता आ आयोजन किया गया। इस निबंध प्रतियोगिता में बी ए अंग्रेजी के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। इसमें बीए फर्स्ट सेमेस्टर की सृष्टि सिंह ने प्रथम, बीए सेकेण्ड सेमेस्टर की राम विशाल पाण्डेय ने द्वितीय, बी ए फिफ्थ सेमेस्टर के प्रशांत सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

News & Events

बी एड विभाग द्वारा विविध आयोजन हुए

बी विभाग ने श्री धनजंय सिंह जूनियर हाई स्कूल मे कक्षा 6 से 8 तक एचीवमेंट टेस्ट कराकर हरेक कक्षा के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र, मेडल,और पुरस्कार देकर सम्मानित किया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा मनोविज्ञान की भूमिका एनईपी 2020 के परिप्रेक्ष्य में विषय पर विद्यार्थी संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसमें डॉ भारती सिंह ने बिषय रखा।

सड़क सुरक्षा जागरूकता हेतु बी एड विभाग ने प्राचार्य के नेतृत्व में सड़क पर अभियान चलाया। इस पर एक निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। गणित दिवस पर एक संगोष्ठी का आयोजन विभाग द्वारा कराया गया जिसमें मैडम शांतिलता ने विषय रखा । मशरुम कल्टीवेशन का बीएड विद्यार्थियों ने अवलोकन किया। भारत रत्न भीमराव के पुण्य तिथि पर एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन विभाग द्वारा कराया गया।

बीएड के 13 प्रशिक्षुओं का अध्यापक के रूप में चयन

बिहार प्रांत में BPSC शिक्षक भर्ती में राणा प्रताप पी जी कॉलेज के 13 बीविद्यार्थियों ने नियुक्ति प्राप्त की। .एड . जुनियर हाई स्कूल में शिवानी अग्रहरि, सूफिया बानो,संस्कृति भावना,शुभी श्रीवास्तव,.विकास यादव ,अनम फात्मा प्रवक्ता के रूप में आफरीन, जितेंद्र कुमार,माहआलम,किरण यादव, सलिल पटेल, अनुराधा यादव,मनीषा सिंह का चयन हुआ।

विद्यार्थियों ने किया शिमला का अध्ययन

भौगोलिक पर्यटन पर शिमला गये राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के विद्यार्थी बाईस दिसंबर को वापस लौटे। यह जानकारी देते हुए विभागाध्यक्ष डॉ आलोक कुमार ने बताया कि परास्नातक भूगोल के विद्यार्थियों का एक दल उनके साथ असिस्टेंट प्रोफेसर डॉसंतोष कुमार सिंह के . निर्देशन में हिमांचल प्रदेश गया था । वहां नेहा साहू, महिमा पांडेय,प्रीतम सिंह,अमन सिंह, अंकित मिश्र,शुभम जायसवाल व तौकीर अहमद आदि विद्यार्थियों ने पर्वतीय क्षेत्र के भौगोलिक उच्चावच आदि का अध्ययन किया।

छात्रा प्रियांशी राय , खुशबू ,राखी पाठक , मनीषा, महिमा सरोज व छात्र कुंवर विकास सिंह, श्याम करन ,गौरांग राय तथा प्रिंस कुमार ने बताया कि शिमला के आसपास सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार मानव जीवन के रहन सहन , पर्यटन , व्यापार व सीढ़ीदार कृषि का अध्ययन करना रोमांचकारी रहा ।

News & Events

दो दिवसीय सेबी जागरुकता कार्यक्रम सम्पन्न वाणिज्य संकाय का आयोजन

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय व राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार संस्थान द्वारा बारह एवं तेरह दिसंबर को दो दिवसीय सेबी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया । समापन अवसर पर प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में लिमिटेड कंपनियों की कार्यविधि व नियामक ढाँचे की विस्तृत जानकारी दी । डॉअर्चना पांडेय ने सेबी की कार्यप्रणाली समझाई ।उन्होंने प्रश्नोत्तर व फीडबैक के माध्यम से विद्यार्थियों को . हानि की जानकारी देते हुए कहा कि आजकल शेयर मार्केट में रोजगार-स्वरोजगार व वित्तीय लाभकी अपार संभावनाएं हैं। कार्यक्रम समन्वयक डॉरामकांत तिवारी ने विद्यार्थियों को गूगल फॉर्म एवं सेबी से जुड़ी . बारिकियां सिखाईं। वाणिज्य संकाय के डीन एवं विभागाध्यक्ष डॉविवेक सिंह ने सेबी की स्थापना एवं वर्तमान . कार्यविधि के बारे में बताया। डॉबृजेश प्रताप . सिंह ने सेबी से जुड़ी संस्था कोटक सिक्योरिटीज के आंतरिक ढाँचे के बारे में बातचीत की। असिस्टेंट प्रोफेसर यशस्वी प्रताप सिंह ने कई सत्रों में शेयर, बॉन्ड, डिबेंचर, एस आई पी, म्यूचुअल फंड आदि वित्तीय लेन देन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

भौगोलिक पर्यटन कर विद्यार्थियों ने किया नैनीताल का अध्ययन भूगोल विभाग का आयोजन

भौगोलिक पर्यटन पर नैनीताल गये राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के विद्यार्थी सोलह दिसंबर को वापस लौटे। यह जानकारी देते हुए विभागाध्यक्ष डॉ आलोक कुमार ने बताया कि स्नातक भूगोल के विद्यार्थियों का एक दल उनके साथ असिस्टेंट प्रोफेसर डॉसंतोष कुमार सिंह व अभिषेक शुक्ल . के निर्देशन में उत्तराखंड गया था । वहां अनुभवी सिंह, रागिनी वर्मा ,मो साहिल.,अभिनव ओझा आदि विद्यार्थियों ने कुमाऊं मंडल के भौगोलिक उच्चावच आदि का अध्ययन किया।

छात्रा आस्था निषाद ,अंतिमा शुक्ल व छात्र अभिषेक यादव तथा सुनील कुमार ने बताया कि नैनीताल के आसपास सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार मानव जीवन के रहन सहन , पर्यटन , व्यापार व सीढ़ीदार कृषि का अध्ययन करना रोमांचकारी रहा ।

विद्यार्थियों ने किया मेडिकल कालेज का समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के एम ए समाजशास्त्र प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने चौदह दिसम्बर को स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय व चिकित्सालय का समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण किया। विभागाध्यक्ष प्रो एम पी सिंह ने बताया कि सर्वेक्षण के परिणामों की जानकारी मेडिकल कालेज के प्राचार्य को दे दी गई है। असिस्टेंट प्रोफेसर अखिलेश कुमार सिंह, बृजेश कुमार सिंह, वीरेंद्र गुप्त, डॉबृजेश सिंह.शालिनी व डॉ. के दिशा निर्देश में महाविद्यालय के विद्यार्थी सत्यदेव यादव , सलमान, शिवानी गौड़ ,तनू यादव , अंजली, संख्या शर्मा आदि ने विभिन्न समूहों में मेडिकल कालेज के मरीजों से बातचीत की । विद्यार्थियों ने बताया कि चिकित्सालय में भर्ती विफना देवी , शगुना,जैतुन निशा, प्रदीप सिंह,विजय व उमेश आदि मरीजों से बातचीत करने पर पता चला कि सफाई व्यवस्था और नर्सिंग स्टाफ का असहयोग चिकित्सा महाविद्यालय की दो सबसे बड़ी समस्याएं हैं। सर्वेक्षण में पता चला कि भर्ती हुए अस्सी मरीजों में साठ प्रतिशत पुरुष और चालीस प्रतिशत महिला मरीज हैं। जिनकी उम्र अठारह से साठ वर्ष के बीच है । ज्यादातर मरीज सर्दी, खांसी,बुखार,पेटदर्द ,दस्त, हड्डी फ्रैक्चर व आंख आपरेशन के थे ।

बीए की छात्राओं ने किया इंटर के छात्रों का मनोवैज्ञानिक सर्वेक्षण

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के बीए पंचम सेमेस्टर मनोविज्ञान विषय की छात्राओं ने महात्मा गांधी स्मारक इंटर कालेज पहुंच कर बोर्ड परीक्षा से पहले इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों का मनोवैज्ञानिक परीक्षण किया। पंद्रह दिसंबर को विभागाध्यक्ष डॉ प्रदीप कुमार सिंह के निर्देशन में छात्राओं ने पांच अलग समूह बनाकर इंटर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से बातचीत की । नाजरीन बानो ,फरहीन बानो , खुशनुमा बानो ,शालू गौतम व सेजल गुप्त के नेतृत्व में बनाए गए।

इंटरमीडिएट विज्ञान वर्ग के छात्र अनुभव प्रताप,आलोक रंजन मिश्र ,सौरभ कुमार, राहुल,शुभांकर ,सुभाष प्रजापति,अमित यादव ,अनुराग ,मो सगीर ,शनि कुमार गौतम ,प्रीतम वर्मा व श्याम निषाद आदि इस सर्वेक्षण का हिस्सा बने । सर्वेक्षण में शामिल नेहा वर्मा , आयुषी सिंह व सताक्षी भारद्वाज ने बताया कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण में पता चला कि ज्यातर छात्रों में परीक्षा को लेकर तनाव है । उनके अंदर बोर्ड परीक्षा को लेकर प्रसन्नता नहीं दिखी ।परीक्षा में रुचि केवल पचास प्रतिशत विद्यार्थियों में ही दिखाई दी ।

रक्षा अध्ययन विभाग में संगोष्ठी

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभाग में चौदह दिसम्बर को जैविक युद्धकला पर संगोष्ठी आयोजित हुई। विभागाध्यक्ष डॉ हीरालाल यादव ने कहा कि इस समय दुनिया परोक्ष रूप से कीटाणु व जीवाणु युद्ध से जूझ रही है। संगोष्ठी में प्रिया गुप्त,खुशी रावत , खुशी सोनी,अक्षरा गुप्त,विवेक निषाद आदि विद्यार्थी उपस्थित रहे।

बृजेश प्रताप सिंह को मिली पीएचडी उपाधि

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर बृजेश प्रताप सिंह को डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने वाणिज्य विषय में पीएचडी की उपाधि प्रदान की है । बृजेश ने संत कवि बाबा बैजनाथ पीजी कालेज हरख बाराबंकी के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ धर्मवीर के निर्देशन में 'ग्रामीण क्षेत्रों में एसबीआई की ग्राहक संबंधी सेवाओं के बारे में जागरूकता का स्तर - सुलतानपुर जिले के विशेष संदर्भ में ' विषय पर शोध कार्य किया है । शहर के बढ़ैयावीर निवासी वीरेंद्र प्रताप सिंह व शारदा सिंह के पुत्र बृजेश प्रताप सिंह ने स्नातक व परास्नातक की पढ़ाई के एन आई से की थी। उनकी इस उपलब्धि पर महाविद्यालय परिवार ने प्रसन्नता जताई है।

चल रही हैं विश्वविद्यालय की परीक्षाएं -

इन दिनों महाविद्यालय में विश्वविद्यालय की परीक्षाएं चल रही हैं । परीक्षा नियंत्रक डॉ.धीरेन्द्र कुमार ने बताया कि स्नातक प्रथम, तृतीय व पंचम सेमेस्टर की परीक्षाएं 18 दिसंबर से शुरू हैं जो 13 फरवरी तक चलेंगी। साथ ही एम ए प्रथम व तृतीय सेमेस्टर की परीक्षाएं 18 जनवरी से शुरू होकर 31 जनवरी तक चलेंगी।

सुबह 8.00 से 10.00 , दोपहर में 11.30 से 1.30 व सायं 3.00 से 5.00 बजे तक तीन पालियों में चलने वाली परीक्षा को सकुशल सम्पन्न कराने में महाविद्यालय की टीम तन्मयता से लगी हुई है ।

Article

डॉ महमूद आलम
विभागाध्यक्ष उर्दू

"विवेकानन्द जयंती पर विशेष"

سوامی وویکا نند ..
عالمی بھائی چارے، مزہبی ہم آہنگی اور انسانیت کے علم بردار

ہندوستان دنیا کی سب سے بڑی جمہوریت ہے۔ اس ملک کی سرزمین نے قدیم زمانے سے ہی طرح طرح کے رنگ، نسل، زبان، لباس اور طرز بودوباش کے لوگوں کو اپنی آغوش میں پناہ دی ہے۔ یہ وہ سرزمین ہے جس میں مختلف تہذیبوں، ثقافتوں اور مذاہب کو پھلنے پھولنے کا موقع ملا یعنی ہندوستانی سماج ایک ایسا سماج ہے، جس میں طرح طرح کے لوگوں کی موجودگی ہے، جو ہزاروں سال سے ایک دوسرے کے ساتھ میل جول سے رہتے آ رہے تھے۔ یہ امن، دوستی، اتحاد اور گنگا جمنی تہذیب جیسی قدروں کے لئے جانا جاتا ہے۔ اس سرزمین کی کوکھ سے شنکر اچاریہ، بھرتھریہری، بدھ، مہاویر، گرونانک، مہاتما گاندھی، امبیڈکر، ٹیگور، مولانا حسین احمد مدنی، سوامی وویکا نند، ذاکر حسین، نیتاجی سبھاش چندر بوس وغیرہ جیسی عظیم اور مشہور ہستیاں پیدا ہوئیں۔

ان تمام ہستیوں نے اپنے اپنے دور میں میل جول اور بھائی چارے کا سبق دیا۔ آج وہ ہمارے بیچ نہیں ہیں لیکن ان کی ہدایات اور پیغامات آج بھی ہمیں اس سرزمین پر پرامن زندگی گزارنے کی خواہش اور حوصلہ دیتے ہیں۔ ہمیں نہیں بھولنا چاہیے کہ درخت اپنا پھل خود نہیں کھاتے، دریا خود اپنا پانی نہیں پیتا۔ وہ دوسروں کے لیے جیتے ہیں کیونکہ دوسروں کے لیے جینا ہی اصل زندگی ہے۔ اسی طرح کبھی کبھی عظیم ہستیاں پیدا ہوتی ہیں جو دوسروں کی بھلائی کے لیے جیتے ہیں۔ وہ انسانوں کے لیے امن اور خوشی لاتے ہیں، ایسی ہی ایک ہستی کا نام ہے سوامی وویکانند۔

ایسے لوگ مایا یعنی فریب اور دنیا کی رنگینیوں، ختم ہو جانے والی لذتوں اور فتنہ فسادوں سے خود کو بچا کر بنا کسی خودغرضی کے دوسروں کو بھی ان سے بچانے میں مدد کرتے ہیں۔ یہ عظیم ہستیاں کب اور کہاں پیدا ہوئیں یا وہ کتنی دیر تک زندہ رہیں، اس سے کوئی فرق نہیں پڑتا، ان کی زندگی اور ان کا پیغام تمام عمر کے تمام لوگوں کے لیے تحریک کا سبب ہوتا ہے۔

12 جنوری نوجوانوں کے قومی دن کے طور پر منایا جاتا ہے۔ سوامی وویکا نند 12 جنوری 1863 عیسوی کو کلکتہ میں پیدا ہوئے۔ محض 39 سال کی عمر میں وہ اس دار فانی سے رخصت ہوگئے لیکن اس مختصر سی مدت میں انہوں نے اپنی فضیلت، بے لوث خدمات اور متعدد کارناموں کا دائمی نقش، انسانیت کا گہرا نشان اور اپنی عظمت و نرمی و نیکی کی ایک شاندار علامت چھوڑی۔

وویکا نند ویدانت کے فلسفہ کی تجدید، عالمی بھائی چارے اور مذہبی ہم آہنگی کے زبردست حامی تھے۔ ان کا سب سے بڑا کارنامہ انسانیت نوازی ہے، وہ انسانوں کو انسانوں سے جوڑنا سکھاتے ہیں، انسانوں میں اتحاد، محبت اور بھائی چارہ پیدا کر دیتے ہیں۔ ہندو مذہب کی وہ باتیں اور وہ سچائی جس سے دنیا کو فائدہ پہنچ سکتا ہے، اسے سائنٹیفک طریقے سے پیش کرتے ہیں لیکن دوسرے مذاہب کی حقانیت اور ان کی خوبی بیان کرنے میں بھی کسی پس و پیش سے کام نہیں لیتے، وہ اسلام اور اس کی تعلیمات کے بہت معترف اور معتقد ہیں۔ انہوں نے کہا کہ میں اپنے مادر وطن ہندوستان کی دو عظیم نظام حیات ہندو مذہب اور اسلام کے سنگم اور میل جول میں ہی ملک کی ترقی کی اکلوتی امید پوشیدہ ہے۔ میں اپنے دل و دماغ کی آنکھوں سے وہ مستقبل دیکھ سکتا ہوں جہاں ویدانت کے دماغ اور اسلامی ڈھانچے کے ساتھ ہمارے ملک کے لوگ فتنہ فساد اور آپسی جھگڑوں سے باہر نکلیں گے اور مستقبل میں شاندار ہندوستان کا پرچم لہرائے گا۔ ہم 1893 عیسوی میں شکاگو میں عالمی پارلیمنٹ آف ریلیجنز میں ان کی فکر انگیز تقریر کو یاد کر سکتے ہیں۔ انہوں نے کہا "مدد کرو اور نہ لڑو، ایک دوسرے کی اچھی باتوں کی سراہنا کرو۔ جھگڑا نہیں، ہم آہنگی اور امن ہو نہ کہ اختلاف۔" سوامی وویکا نند کے بارے میں رابندرناتھ ٹیگور نے کہا کہ"اگر کوئی ہندوستان کو سمجھنا چاہتا ہے تو وویکا نند کے فلسفے کو سمجھنا ضروری ہے ۔"

سوامی جی نے ہندوستانی روحانیت کے پیغامات کو نہ صرف پوری دنیا تک پہنچایا بلکہ ہمیشہ عورتوں اور حاشیے کے لوگوں کے حقوق کے لیے کھڑے رہے۔ ان کی تعلیمات ہمیشہ زندہ رہیں گی، ان کی کل بھی اہمیت تھی اور اج بھی اہمیت ہے۔ اگر ہم سوامی جی کے طور طریقوں اور اصولوں پر عمل پیرا ہوں گے تو یقیناً ہم ایک نئے ہندوستان کی تعمیر کے لائق اور قابل ہو سکیں گے۔

ڈاکٹر محمود عالم خان
اسسٹنٹ پروفیسر اردو
رانا پرتاب پی جی کالج، سلطان پور۔

Article

साहित्य के आइने में सुभाष चन्द्र बोस

डॉ.ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी

सुभाष चन्द्र बोस का घटनापूर्ण जीवन इतिहासकारों, शोधकर्ताओं, राजनेताओं, नौकरशाहों और पाठकों को समान रूप से आकर्षित करता है। बोस के जीवन में दिलचस्पी लगातार जारी है । ताइवान में एक घातक विमान दुर्घटना में उनकी मौत को लेकर आज भी दावे-प्रतिदावे किये जा रहे हैं। हाल के दिनों में बोस के बाद के जीवन, विशेषकर जर्मनी, इटली, सिंगापुर, जापान और बर्मा में उनके प्रवास के कालक्रम का पता लगाने के लिए ऐतिहासिक शोध पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया। इस तरह के कार्यों से अक्सर विविध निष्कर्ष, निरंतर अटकलें, कभी-कभार विभिन्न आरोप और बोस के जीवन से संबंधित फाइलों और दस्तावेजों को सार्वजनिक करने की रुक-रुक कर मांग होती रही है। पिछले दशक में विशेष रूप से बोस के जीवन के विभिन्न पहलुओं की आलोचनात्मक खोज देखी गई है क्योंकि शोधकर्ताओं ने जर्मनी में उनके चमत्कारी पलायन के बाद की घटनाओं के अनुक्रम को एक साथ जोड़ने की लगातार कोशिश की है। इन हालिया प्रयासों में उल्लेखनीय हैं सुगाता बोस की ' हिज मेजेस्टीज़ अपोनेंट: सुभाष चंद्र बोस एंड इंडियाज़ स्ट्रगल अगेंस्ट एम्पायर' , किंग्शुक नाग की ' नेताजी: लिविंग डेंजरसली' , आशीष रे की ' लेड टू रेस्ट: द कॉन्ट्रोवर्सी ओवर सुभाष चंद्र बोस की डेथ' , श्रेयस भावे की 'प्रिजनर ऑफ याकुत्स्क: द सुभाष' चंद्र बोस रहस्य अंतिम अध्याय , वेरा हिल्डेब्रांड की युद्ध में महिलाएं: सुभाष चंद्र बोस और झाँसी रेजिमेंट की रानी , रुद्रांग्शु मुखर्जी की नेहरू और बोस: पैरेलल लाइव्स , मार्शल जे. गेट्ज़ की सुभाष चंद्र बोस: एक जीवनी , कृष्णा बोस की एमिली और सुभाष: एक सच लव स्टोरी, लियोनार्ड ए. गॉर्डन ब्रदर्स अगेंस्ट द राज: ए बायोग्राफी ऑफ इंडियन नेशनलिस्ट्स शरत एंड सुभाष चंद्र बोस और कई अन्य रचनाएँ।

सुभाष चन्द्र बोस स्वयं विचारक और लेखक थे। उनके पत्र , डायरी लेख आदि ऐतिहासिक विरासत हैं। वाणी प्रकाशन ने सत्य प्रकाश सिंह के सम्पादन में 'नेताजी सुभाष चन्द्र बोस दस्तावेज : पत्र डायरी' नाम से 2021 में 207 पेजों की पुस्तक प्रकाशित की है । नेताजी के अंतिम समय तक उनके पूर्ण विश्वासपात्र तथा निकट सहयोगी रहे डॉ० शिशिर कुमार बोस ने 'नेताजी रिसर्च ब्यूरो' की स्थापना कर नेताजी के 'समग्र साहित्य' के प्रकाशन का कार्य विनोद सी० चौधरी के साथ मिलकर 1961 ईस्वी में आरंभ किया था । सन् 1980 में 12 खंडों में संकलित रचनाओं के प्रकाशन का काम शुरू हुआ। अप्रैल 1980 में सर्वप्रथम बांग्ला में इसके प्रथम खंड का प्रकाशन हुआ था और नवंबर 1980 में अंग्रेजी में। हिंदी में इसका प्रथम खंड 1982 में प्रकाशित हुआ । इन तीनों भाषाओं में समग्र साहित्य का प्रकाशन होते रहा। इसका अंतिम (12वाँ) खंड 2011 ई० में प्रकाशित हुआ ।इस 'समग्र वाङ्मय' के प्रथम खंड में उनकी 'आत्मकथा' के साथ कुछ पत्रों को सम्मिलित किया गया है । द्वितीय खंड में उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'भारत का संघर्ष' (द इंडियन स्ट्रगल) का प्रकाशन हुआ है। अन्य खंडों में उनके द्वारा लिखित पत्रों, टिप्पणियों एवं भाषणों आदि समग्र उपलब्ध साहित्य का क्रमबद्ध प्रकाशन हुआ है। इस प्रकार यथासंभव उपलब्ध नेताजी का लिखित एवं वाचिक 'समग्र वाङ्मय' अध्ययन हेतु सुलभ हो पाया है । इस 'समग्र वाङ्मय' के आधार पर नेताजी के व्यक्तित्व का विशेषण और उनके विचारों का मनन किया जा सकता है ।2023 में प्रभाकर प्रकाशन से छपकर आई अशोक तिवारी की पुस्तक "सुभाषचंद्र बोस और आज़ाद हिंद फौज" का संपादन मोनिका मिश्रा और अंशु चौधरी ने किया है ।सुभाष चन्द्र बोस पर गोपाल प्रसाद व्यास ने कई कवितायें लिखीं। उनकी कविता खूनी हस्ताक्षर काफी चर्चित हुई थी । सुभाष चंद्र बोस का शरीर भले ही हमारे बीच नहीं है पर वे विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक आइने में आज भी चमक रहे हैं।

कविता

तुम हो तो ही जीवन मां

पलक उपाध्याय
O Level Computer Student

तुमसे जीवन में रौनक मां ,
तुम हो तो ही जीवन मां।
ममता तुम्हारी शीतल सी,
तुमसे अनुशासित हर दिन है।
निस्वार्थ प्रेम है खोट नहीं ,
तुम स्नेह की बहती गंगा मां।
यह कहना अतिशयोक्ति नहीं,
है वात्सल्य की परिभाषा मां ।
गोद तुम्हारी धरती सी,
आकाश तुम्हारा आंचल है ।
तुम्हारी थपकी की पुरवाई ,
हरती कष्टों का बादल है।

सुबह से लेकर संझा तक,
तुम कैसे सब कर लेती हो?
उदधि सा धैर्य समाए तुम,
सब कुछ क्यूं सह लेती हो?
सामर्थ्य तुम्हारा वृक्षों सा ,
काया प्रसून सी कोमल मां।
यह सच है कि पूरक हो तुम,
तुमसे ही हर घर चलता है।
अर्भक की पालनहार तुम्हीं,
संसार तुम्हीं में पलता है ।

- पलक उपाध्याय

राष्ट्रीय संगोष्ठी में दिया व्याख्यान

हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री इंद्रमणि कुमार ने मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज कोलकाता और संत तुलसीदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय कादीपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 25-26 दिसंबर को आयोजित 'हिंदुत्व और मानववाद' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में संदर्भ वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया।

GLIMPSE OF COLLEGE